नाम - डॉ॰ प्रदीप कुमार राय
विषय - राजनीति-शास्त्र
कक्षा - बी॰ए॰ (प्रतिष्ठा) पार्ट - 01
पेपर - 01
भाग - 01
दिनांक - 21. 05. 2020

टॉपिक - राज्य का वास्तविक आधार इच्छा है, बल नहीं - इस संदर्भ में ग्रीन का विचार।

व्यक्तिवादियों, साम्यवादियों एवं अराजकतावादियों द्वारा राज्य को शक्ति का परिणाम मानने के बजाय अंग्रेज विचारक टी॰ एच॰ ग्रीन ने बताया है कि 'राज्य का वास्तविक आधार बल नहीं वरन् इच्छा है। भय द्वारा राज्याज्ञा का पालन करवाने से राज्य स्थायी नहीं हो सकता है।

ग्रीन के विचार से अधिकारों की रक्षा हेतु राज्य का प्रादुर्भाव हुआ है। मनुष्य अपने व्यक्तिगत स्वार्थवश दूसरों के अधिकारों की अवहेलना करता है जो सार्वजनिक दृष्टि से उचित नहीं है। सभी परिस्थितियों में सबके अधिकारों की रक्षा करनेवाली एक संस्था का होना सबके सामान्य इच्छा में निहित है और इसी सामान्य इच्छा के परिणामस्वरूप राज्य की स्थापना हुई है।

राज्य द्वारा यदा-कदा शक्ति या बल का प्रयोग किया जाना सामान्य इच्छा की रक्षा के उद्देश्य से ही किया जाता है। इसमें रूसो के इस विचार की झलक

Teacher's Signature ....

मिलती है कि राज्य हमारे विरुद्ध बल प्रयोग इस उद्देश्य से करता है कि हम स्वतंत्र हो सकें। समाज में अनैतिक कार्य, चोरी, हिंसा, अतिक्रमण आदि जो भी कार्य हैं वह सामान्य इच्छा के विपरीत है अतः राज्य अपनी विभिन्न संस्थाओं द्वारा इन्हें रोकने का प्रयास करता है जैसे पुलिस, न्यायालय आदि। इस प्रकार राज्य के जिन कार्यों में हमें शक्ति दिखाई देती है वह वस्तुतः सामान्य इच्छा से ही उत्पन्न होते हैं। इसीलिये ग्रीन का मत है कि, राज्य का आधार इच्छा है, शक्ति नहीं।

ग्रीन के उपर्युक्त कथन की पुष्टि निम्न आधारों पर की जा सकती है—

(1.) यदि शक्ति ही राज्य का वास्तविक आधार होती तो पुलिस एवं सैन्य संस्थाएं ~~संस्थाएं~~ क्यों राजकीय आज्ञाओं का पालन करते हैं।

(2.) शक्ति एक अस्थायी तत्व है किंतु राज्य एक स्थायी संस्था है। रूसो के अनुसार, शक्ति तो भौतिक शक्ति होती है मनुष्य को शक्ति के सम्मुख विवशतावश झुकना पड़ता है न कि अपनी इच्छावश।

(3.) व्यवहारिक अनुभव एवं इतिहास भी यह बताता है कि किसी भी राज्य ~~का~~ के अस्तित्व का आधार मात्र शक्ति नहीं होती। इच्छाओं की उपेक्षा एवं शक्ति आधारित होने के कारण फ्रांस में बूर्बोवंश, रूस में जार शासन, भारत में ब्रिटिश शासन समाप्त हो गये। (२६)

Teacher's Signature ....